● **पढ़ो और समझो :**

५. चिड़िया की पाती

– राजेश गनोदवाले

जन्म : ५ मई १९६७ रायपुर (छ.ग.) **रचनाएँ :** एक शहर था रायगढ़, शैलचित्र, पाँच कॉफी टेबल बुक आदि **परिचय :** गत २५ वर्षों से पत्रकारिता के क्षेत्र से संलग्न, अनेक पुरस्कारों से सम्मानित, कला समीक्षक के रूप प्रसिद्ध हैं ।

प्रस्तुत पत्र के माध्यम से लेखक ने वृक्ष, पर्यावरण एवं प्राणी संरक्षण के लिए हमें जागृत किया है ।

अध्ययन कौशल

'पर्यावरण सप्ताह' के बारे में पोस्टर बनाने हेतु निम्न मुद्दों की सहायता से चर्चा करो :

वर्ड आर्ट | ग्राफिक आर्ट | चित्र | कालावधि

माननीय मुख्यमंत्री जी,

सादर नमस्कार ।

मैं, गौरैया हूँ । वही जिसे आप सब चिड़िया कह लिया करते हैं । वही गौरैया जो आपके गाँव के घर के आँगन में फुदकती रहती थी । जिसे बचपन में भोजन करते समय आप चावल के दाने खिलाया करते थे । जिसके घोंसले देखने के लिए कभी-कभी दिनभर भटकते रहते थे । जंगल कट गए । मैं भी शहर में आ गई। चौंक गए न, कि भला चिड़िया का मुख्यमंत्री से क्या काम ? वैसे भी मेरी औकात इतनी कहाँ कि आपके सामने फरियाद लाऊँ, एकाध बार मन बनाया कि जनदर्शन में मिलूँ लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी । कोई हमारी पंचायत तो है नहीं लेकिन अधिकारियों ने इधर हालात ही कुछ ऐसे कर दिए कि अपनी पीड़ा (वैसे हम सबकी) आपके सामने कहने का साहस किया क्योंकि मैं आपके राज्य की निवासी हूँ सो आप ही नजर आ रहे हैं । आपसे सबका काम पड़ता रहता है तो भला इस दुख की घड़ी में मैं कहाँ जाऊँ ? मैं आप तक पहुँच सकती नहीं । अतः पत्र लिखकर अपनी बात आप तक पहुँचा रही हूँ ।

बात ऐसी है, मैं टाउन हॉल परिसर में रहा करती थी, पता ठिकाना तो मेरा अब भी नहीं है लेकिन घर उजड़ गया । आप याद कीजिए इसी टाउन हॉल के बाहर दो घने पेड़ थे । अपने रंग में रँगे हुए हरे-भरे लहलहाते झूमते रहते थे। कभी किसी को कोई कष्ट नहीं पहुँचाते थे । अच्छे तंदुरुस्त बिलकुल एक किनारे, किसी के लिए इन पेड़ों ने कभी अड़चन पैदा नहीं की । हमारी बिरादरी के लिए तो जैसे दोनों बुजुर्ग पेड़ वरदान थे । मेरी माँ से मैंने सुना था उनकी माँ भी इसी पेड़ की ऊपरी शाखा पर जन्मी थीं । जानते हैं, इसी पेड़ में मैंने अपना जीवन साथी पाया । बीते वसंत में मेरा परिवार बढ़ा और मैं भी दो बच्चों की माँ बनी । बच्चे मुझी पर

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ में आए मुद्दों को स्पष्ट करें । 'वृक्षों की आवश्यकता और उपयोगिता' विषय पर निबंध लिखने हेतु प्रेरित करें ।

स्वयं अध्ययन

'सौजन्य सप्ताह' के लिए घोषवाक्यों सहित चित्र बनाओ और विद्यालय में प्रदर्शनी लगाओ ।

गए हैं, ऐसा रिश्तेदार कहा करते थे । अपनी दिनचर्या के मुताबिक इन बच्चों को घोंसले में बेखौफ छोड़ मैं दाना-पानी की तलाश में उड़ जाया करती थी । सभी जानते हैं कि हम वैसी भी नरम-नाजुक हुआ करती हैं; उसपर हमारे बच्चे । उनकी उम्र ही क्या थी । उस समय वे इतने कोमल थे कि पेड़ों की पत्तियों का शोरगुल सुन आँखें मूँद लिया करते थे, फिर दिनभर का शोरगुल अलग । इन पेड़ों का यही घनापन भयंकरतम शोर को रोक दिया करता था और मैं अपने बच्चों के संग चैन की नींद में डूब जाया करती थी । दोपहर में मैंने लोगों को इन्हीं वृक्षों की छाँह में दो पल सुस्ताते भी देखा है । कई दफा हॉल के कार्यक्रमों में आए मेहमान भी इन्हीं पेड़ों की छाँह में बैठे खाना खाते दिखते थे । इसी बहाने हमें भी कुछ दाना-पानी मिल जाता था ।

सब कुछ ठीक था कि अचानक एक रोज हम लोगों की दुनिया उजड़ गई । अचानक कुछ लोग आए और इन पेड़ों के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगे । उनके

इरादे ठीक नहीं थे, मैं इतना डर गई कि उस दिन घोंसले से निकली नहीं, मेरे बच्चे तो पंखों की ओट में दुबक गए । शाम होने को आई; मैं घोंसले में ही रही । सूरज डूब रहा था । शाखाएँ भी शांत थीं और पेड़ सोने की तैयारी में । अचानक लगा पेड़ को कोई पूरी तरह हिला रहा हो । देखा तो कलेजा मुँह को आ गया । पेड़ काटा जा रहा था, मैं अपने बच्चों को सँभाल भी न सकी जैसे तेज आँधी चली हो । कुछ ही समय में वह पेड़ जमीन पर था और मेरे बच्चों का कहीं अता-पता नहीं, ना मालूम किधर फेंका गए। पेड़ क्या कटा हमारे भाई-बंद, सखा सब उजड़ गए ।

पता चला कि सौंदर्यीकरण में बाधा थे ये पेड़, इसीलिए काटे गए । मुझे नई जानकारी मिली कि पेड़ों से सौंदर्य खराब होता है । हमने तो उस पेड़ में, बसेरा बनाया था जो न ही ट्रैफिक के हिसाब से परेशानी खड़ी करता था और न ही सौंदर्य के पहलू से, वरन ये पेड़ घनी छाया देते थे । खैर, अपने बच्चों के चक्कर में, मैं पेड़ कटने का दर्द लगभग भूल गई थी । चिट्ठी लिखने की नौबत भी नहीं आती लेकिन सौंदर्यीकरण की दुहाई देते आठ-दस पेड़ों पर फिर कुल्हाड़ी चल गई । अब जो पेड़ कटे वे कलेक्टोरेट के पीछे एक झुरमुटे में से हैं, जहाँ मैंने नया ठिकाना ढूँढ़ा था । भला अब इन पेड़ों से कैसी बाधा थी ? बड़ा अजीब है । वैसे भी आजकल शहरों में पेड़ों का 'सफाया उत्सव' चल रहा है । प्रशासन और अफसर, कौन देता है अनुमति ? ठीक है विकास होना चाहिए, 'फोर लेन' जरूरी है लेकिन कोई ये क्यों नहीं समझता कि पेड़ और पक्षी भी उतने ही जरूरी हैं ।

ताज्जुब मुझे इस बात का होता है कि पर्यावरण की बात करने वाले लोग, सभा-समितियाँ भी मौन साधे बैठी हैं ! कोई सरकारी अफसर तो इस तरफ सोचने से रहा । इतना तो आप भी जानते हैं कि आजकल पेड़ों के विस्थापन की नई तकनीक आ गई है । अब तो

❑ 'गौरैया' के संरक्षण हेतु विद्यार्थी क्या-क्या कर सकते हैं, उनसे पूछें । उनके आस-पास के वृक्षों की सूची बनवाएँ । इस पत्र के मूल आशय को विद्यार्थियों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें । वृक्षों के योगदान पर भित्तिचित्र, पोस्टर, घोषवाक्य बनवाएँ ।

वाचन जगत से

किसी महान विभूति द्वारा लिखे गए पत्रों के संग्रह को पढ़ो तथा संकलन करो ।

पूरा का पूरा पेड़ उठाकर ठीक उसी तरह इनका अन्यत्र रोपण किया जा सकता है । हम उसकी मदद ले सकते हैं पर ऐसा भी नहीं हो रहा । आरी वहाँ-वहाँ तो चल ही रही है जहाँ कोई चारा नहीं लेकिन वहाँ क्यों, जिधर जरूरत नहीं है ।

पहले विचार किया कि अपनी बिरादरी के संग आपसे मन का दुख बाँटती, पर मिलना आसान कहाँ, फिर उससे फायदा भी क्या होता ? आपके पास समय कहाँ है । आजकल सब कुछ है ये मुआ वक्त ही तो नहीं है । एक ही चारा नजर आया, चिट्ठी लिखूँ । कहते हैं, पीड़ा का अनुभव वैद्य ही कर पाते हैं। आपसे बड़ा भला कौन वैद्य हो सकता है । आपके पास इतने संसाधन हैं । आपके एक इशारे पर चीजें इधर से उधर हो जाती हैं । मैंने सोचा कि अपनी बात आप तक पहुँचाऊँ । फिर सोचा कि भला मेरी बात कौन आप तक पहुँचाएगा ? बहुत सोच-विचार करके यह पत्र लिख रही हूँ । पत्र में मैं विस्तृत रूप से अपने एवं अपने साथियों पर आए संकट का विवरण दिया है। बिना पत्र के आपको कैसे पता लगेगा कि हमारी पूरी प्रजाति संकट में है । शहर-गाँव हमारे ठौर-ठिकाने थे, धीरे-धीरे वे नष्ट होते जा रहे हैं, बड़ी खामोशी से हम गायब हुई जा रही हैं । कभी समय मिले तो पैदल घूमकर देखिए । धूल से फेफड़े जाम हो रहे हैं । कोई ठीक से साँस भी नहीं ले पाता, पेड़-पौधों की हरी पत्तियाँ तो ऐसे नजर आती हैं मानो उन्हें पीलिया हो गया हो । ताजा हवा की तलाश में सुबह लोग घूमने निकलते हैं । वे हवा कम, प्रदूषण अधिक लेकर लौटते हैं ।

इन बगीचों में सुबह-सुबह मैं जब लोगों को हँसते देखती हूँ तो मेरे लिए तय करना मुश्किल हो जाता है कि वो हँस रहे हैं या हाँफ रहे हैं ! शिकायत इसीलिए नहीं करने बैठ गई कि मेरा घोंसला उजड़ गया । पेड़ हम सबके हैं, हमारी उम्र तो वैसे भी कम हुआ करती है । आप लोग देखिए, कैसे जी पाएँगे ? आपके सामने तो पूरी पीढ़ी है । कैसे जिएगी ? क्या होगा अपने आने वाली पीढ़ी का भविष्य ? मेरी बातें कड़वी लगे तो क्षमा कर दीजिएगा । यों भी मेरे फेफड़े जल्दी जवाब देने लगते हैं । फिर किसी घने पेड़ में फुदकती हूँ तो कुछ राहत मिलती है । काफी समय लिया, बड़ी व्यस्त दिनचर्या रहती है आपकी । मैं भी अपने बच्चों की तलाश में निकलती हूँ । न जाने दोनों हैं भी या नहीं, हैं तो किस हाल में । कड़ा कदम उठाइए, ताकि हमारा यह नगर, हमारा राज्य हरा-भरा बना रहे ।

सादर
आपकी गौरैया,
निवासी उजड़ा घोंसला,
उपवन नगरी, अपना राज्य

❑ पाठ से कुछ वाक्यों का चुनाव करके रचना के अनुसार वाक्यभेद बताने एवं लिखने के लिए प्रेरित करें । यदि उनके आसपास वृक्षों की कटाई हो रही है तो वे क्या करेंगे ? उनकी भूमिका क्या होगी, इसके संदर्भ में किनसे संपर्क करेंगे, पूछें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

औकात = हैसियत, वश

बिरादरी = एक ही जाति का समूह

बेखौफ =बिना डर के, निडर

चारा = घास

पीलिया = एक रोग

मुहावरा

मौन साधकर बैठना = शांत होकर बैठना

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

हमारी पृथ्वी के पास अगर दूसरा सूरज आ जाए तो ....

मेरी कलम से

संचार माध्यमों पर मुद्दों के आधार पर निबंध लिखो :

- लाभ
- हानि
- उपसंहार

सुनो तो जरा

दूरदर्शन के विज्ञापन सुनो और पुनःस्मरण करते हुए नए रूप में सुनाओ ।

बताओ तो सही

'संतुलित आहार' इस विषय पर संवेदनायुक्त भाषण दो :

- प्रस्तावना
- जीवनसत्व
- स्वानुभव
- निष्कर्ष

खोजबीन

'आम्ल वर्षा' की जानकारी अंतरजाल की सहायता से खोजकर लिखो :

- निर्मिति
- कारक
- परिणाम

*** पाठ के आधार पर कारण लिखो :**

(क) चिड़िया को मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिखना पड़ा ।

(ख) चिड़िया का उन पेड़ों से आत्मिक संबंध ।

(ग) चिड़िया को आश्चर्य हुआ ।

(घ) चिड़िया की बुरी हालत ।

सदैव ध्यान में रखो

संतुलित पर्यावरण के लिए 'इको फ्रेंडली' होना चाहिए ।

भाषा की ओर

निम्न वाक्य पढ़ो । इन वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर परिवर्तित वाक्य पुनः लिखो :

१. रेल स्थानक पर निवेदिका उद्घोषणा करती है ।

.....

२. मेरा पुत्र गीत प्रस्तुत कर रहा था ।

.....

३. सफेद घोड़ी तेज दौड़ती है ।

.....

४. भारत वीरों की भूमि है ।

.....

५. सभा में विद्वान शास्त्रार्थ करेंगे ।

.....

६. मालकिन नौकर से काम करवा रही है ।

.....

७. शेर शावकों को शिकार के गुर सिखाता है ।

.....

८. भाभियों ने इस वर्ष जमकर होली खेली ।

.....

९. बंदर नकलची होता है ।

.....

१०. साम्राज्ञी नौका विहार का आनंद ले रही थी ।

.....